महावीर जयंती

चर्चा में क्यों?

10 अप्रैल, 2025 को बिहार में [जैन धर्म](#) के तीर्थंकर [भगवान महावीर स्वामी](#) जी का 2625वाँ जन्म महोत्सव मनाया गया।

मुख्य बिंदु

- **महावीर जयंती के बारे में:**
  - [महावीर जयंती](#), [जैन समुदाय](#) में सबसे पवित्र त्योहारों में से एक है।
  - यह दिन वर्धमान **महावीर के जन्म का प्रतीक** है, जो **24वें या अंतिम तीर्थंकर** तथा **23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ** के उत्तराधिकारी बने।
  - जैन ग्रंथों के अनुसार, भगवान **महावीर का जन्म** [चैत्र माह](#) **के शुक्ल पक्ष के 13वें दिन** हुआ था।
    - [ग्रेगोरियन कैलेंडर](#) के अनुसार, महावीर जयंती आमतौर पर मार्च या अप्रैल महीने में मनाई जाती है।
  - भगवान महावीर की मूर्ति के साथ एक जुलूस निकाला जाता है जिसे **रथ यात्रा** कहा जाता है।
  - स्तवन अथवा जैन प्रार्थनाओं का पाठ करते हुए, भगवान की मूर्तियों का औपचारिक स्नान कराया जाता है जिसे [अभिषेक](#) कहा जाता है।
- **भगवान महावीर:**
  - भगवान महावीर स्वामी ने अपनी गहन **आध्यात्मिक प्रथाओं और शिक्षाओं** के माध्यम से मानवता पर एक अमिट छाप छोड़ी।
  - बचपन में भगवान महावीर का नाम **वर्धमान** था यानी 'जो बढ़ता है'।
  - अपनी **बारह वर्ष की आध्यात्मिक साधना** के दौरान भगवान महावीर ने **चार असाधारण गुणों का प्रदर्शन** किया:
    - **गहन और अबाधित ध्यान:** उनके अटूट ध्यान ने उन्हें गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद की।
    - **कठोर तपस्या:** अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिये उन्होंने अत्यधिक शारीरिक कष्ट सहे।
    - **दर्द की सहनशक्ति:** महावीर स्वामी ने अद्भुत सहनशक्ति का प्रदर्शन किया।
    - **सर्वश्रेष्ठ संतुलन:** उनका आंतरिक संतुलन स्थिर रहा।
  - **वैशाख** के दसवें दिन, महावीर की यात्रा एक निर्णायक क्षण पर पहुँची।
  - **इन 5 शिक्षाओं में ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य/शुद्धता) को महावीर द्वारा जोड़ा गया था।**

वर्धमान महावीर

24वें और अंतिम तीर्थंकर; 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के उत्तराधिकारी (महावीर जैन धर्म के संस्थापक नहीं थे)

जन्म

- कुंडलग्राम के राजा सिद्धार्थ और लिच्छवी राजकुमारी रानी त्रिशला के पुत्र
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में, वज्जि साम्राज्य (आधुनिक वैशाली, बिहार)
- इक्ष्वाकु वंश से संबंधित थे

जैन अनुयायियों के लिये सबसे शुभ त्योहारों में से एक महावीर जयंती, वर्धमान महावीर के जन्म का प्रतीक है

आध्यात्मिक जीवन

- 30 वर्ष की आयु में सांसारिक जीवन त्याग दिया
- 42 वर्ष की आयु में 'कैवल्य' (सर्वज्ञता) प्राप्त किया
- पावा (पटना के पास) में अपना पहला उपदेश दिया

प्रत्येक तीर्थंकर के साथ एक प्रतीक जुड़ा होता है, महावीर का प्रतीक सिंह था

मृत्यु

- माना जाता है कि 72 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया और उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया (5वीं शताब्दी ईसा पूर्व)
- पावापुरी में निधन (आधुनिक राजगीर, बिहार के पास)

मोक्ष - जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति

उपाधियाँ

- महावीर (महान नायक)
- जैन/जितेंद्रिय (जिसने अपनी सभी इंद्रियों पर विजय प्राप्त की)
- निर्ग्रन्थ (जो सभी बंधनों से मुक्त है)

शिक्षाएँ (जैन आगम)

- अहिंसा
- सत्य
- अस्तेय (चोरी न करना)
- अपरिग्रह (अनासक्ति)
- ब्रह्मचर्य (पवित्रता) (महावीर द्वारा प्रतिपादित)

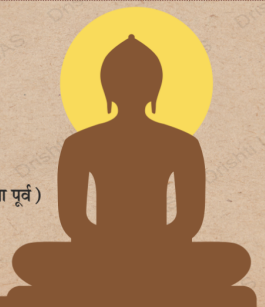

महावीर और उनके शिष्यों ने आम लोगों को ज्ञान देने के लिए प्राकृत भाषा में शिक्षा दी

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/mahavir-jayanti-4